भारतीय मात्स्यिकी क्षेत्र में जेंडर मुख्य धारा और स्वयं सहायक ग्रुपों का प्रभाव: एक क्षणिक चित्रण

विपिनकुमार वी.पी., रेश्मा गिल्स, स्वातिलक्ष्मी पी. एस., अश्वती एन., आतिरा पी.वी., सुनिल पी.वी., धन्या जी., अम्ब्रोस टी. वी., पूजा के. एवं आनमेरी जेफी

भा कृ अनु प – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची, केरल

संबंधित ई- मेल : : vipincmfri@gmail.com

प्रस्तावना

जेंडर मुख्य धारा का सार क़ानून, नीति या कार्यक्रमों सहित सभी क्षेत्रों और स्तरों में स्त्री और पुरुष के भेद को पहचानना है। यह महिलाओं और पुरुषों में चिंताओं को जगाने और सभी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में नीतियों और कार्यक्रमों के डिजाइन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन के जीवंत आयाम का अनुभव करने की रणनीति है, जिससे महिला और पुरुष समान रूप से लाभान्वित हों और असमानता का सामना न करना पड़े। विलियम्स (1995) ने मात्स्यिकी कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी, जेंडर एवं मात्स्यिकी पहल की ओर कदम बढाने और मात्स्यिकी क्षेत्र को घेरने वाले कुछ जेंडर मुद्दों जैसे कि गरीबी, घरेलू श्रम के विभाजन, स्वास्थ्य, शिक्षा तक पहुंच और अन्य अधिकार, संगठनात्मक संस्कृति और जागरूकता बढ़ाना एवं ज्ञान को बांटने आदि घटनाओं के अनुक्रम का पता लगाया। विश्व समुदाय के लिए जेंडर समत्व एक प्रतिबद्धता है जो अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार करारों और संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एफ ए ओ, 2011,2017) में सन्निहित है। स्त्री–पुरुष समानता को हाज़िल करना अंतिम लक्ष्य है (ई सी ओ एस ओ सी, 1997)। यु एन ई एस सी ओ (UNESCO, 2000) द्वारा महिला सशक्तीकरण और स्त्री–पुरुष समानता के लिए तीन उपाय शामिल हैं। जेंडर मुख्य धारा के परिप्रेक्ष्य में सभी नीति योजना, कार्यक्रम, कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन गतिविधियाँ आयोजित करना, विकास एवं लक्ष्य को पुन:परिभाषित करने में महिलाओ की प्राथामिकताओं और दृष्टिकोणों पर विशेष ध्यान देना और समानता, अंतर्जात क्षमता-निर्माण एवं पूर्ण नागरिकता को बढ़ावा देने हेतु लड़कियों और महिलाओं के लाभ के लिए विशिष्ट कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ विकसित करना। स्त्री–पुरुष समानता और निष्पक्षता हाज़िल करने के लिए सभी स्तरों में स्त्री – पुरुष भेदभाव को समाप्त करना अनिवार्य है। निष्पक्षता एक 'माध्यम' है और समानता 'परिणाम' है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों और संधियों में संरक्षित अधिकार के आधार पर समानता का तात्पर्य महिला और पुरुष के लिए समान अधिकार और अवसर है। निष्पक्षता का मतलब न्याय है जो महिलाओं और पुरुषों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए संपदाओं के समान वितरण को सूचित करता है (चार्ल्सवर्त, 2005, केल्ली, 2005). वर्तमान अध्ययन में भारत के चयनित समुद्रवर्ती राज्यों में जेंडर मुख्य धारा पर विविध मात्स्यिकी आधारित सूक्ष्म उद्यमों के स्वयं सहायक ग्रुपों के प्रभाव को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है।

कार्यप्रणाली

'भारतीय मात्स्यिकी क्षेत्र में स्वयं सहायक ग्रुप की मुख्यधारा में स्त्री–पुरुष' विषयक परियोजना के अंतर्गत समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र में केरल, कर्नाटक तमिल नाडु, आन्ध्रा प्रदेश और ओड़ीषा जैसे भारत के 5 समुद्रवर्ती राज्यों में मात्स्यिकी पर आधारित 30 छोटे उद्यमों पर

1000 स्वयं सहायक ग्रुपों के प्रभाव का अनुमान लगाने का प्रयास किया गया। विकसित सूचकांक द्वारा स्वयं सहायक ग्रुप के निष्पादन का स्तर और सशक्तीकरण की सीमा का मापन किया गया। अध्ययन के लिए स्वीकृत कार्यप्रणाली विस्तृत अनुसंधान और व्यावहारिक विस्तार प्रबंधन का व्यवहारमूलक एवं अवगत संयोजन है। वर्तमान अध्ययन में, व्यावहारिक विस्तार प्रबंधन के अंतर्गत जागरूकता और उद्यमिता क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया गया और विस्तार अनुसंधान के अंतर्गत मानकीकृत सूचियों एवं सूचकांकों सहित पूर्व परीक्षित एवं संरचित डेटा के ज़रिए सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षणों पर बल दिया गया। राज्य विभाग एवं गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) के अनुसंधान टीम ने स्वयं सहायक ग्रुपों के विशिष्ट स्थानों का मुआइना किया और स्वयं सहायक संघों के सदस्यों के साथ बातचीत एवं विचार-विमर्च कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मात्स्यिकी पर आधारित 30 विविध सूक्ष्म उद्यमों में शामिल स्वयं सहायक संघ के लिए किसान भागीदारी सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर स्त्री–पुरुष विश्लेषण और आर्थिक संभाव्यता का विश्लेषण किया गया और स्वयं सहायक संघों के सदस्यों के साथ विचार–विमर्श बैठकों का आयोजन किया गया। निष्पक्षता और समानता के संदर्भ में संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण, भागीदारी प्रोफ़ाइल, निर्णय लेना, लिंग की आवश्यकता विश्लेषण आदि में जेंडर मुख्य धारा के प्रभाव के निर्धारण के लिए परिवार के स्त्री और पुरुष के साथ अलग से साक्षात्कार किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी जैसा कि औसत, आवृत्ति, प्रतिशत आदि से डेटा विश्लेषण किया गया।

स्वयं सहायक ग्रुपों (नाबार्ड, 2007, शालुमोल, 2015) के निष्पादन स्तर का मूल्यांकन नाबार्ड द्वारा विकसित जांच सूची एजेंडा द्वारा किया गया, जिसमें समूह का आकार, सदस्यों का प्रकार, बैठकों की संख्या, बैठकों की समय, बैठकों की उपस्थिति, सदस्यों की उपस्थिति, सदस्यों की भागीदारी, ग्रुप के भीतर का बचत संग्रह, बचत की जाने वाली राशि, आंतरिक ऋण पर ब्याज, एसएचजी द्वारा बचत राशि का उपयोग, ऋण वसूली, पुस्तकों का रखरखाव, संचित बचत, एस एच जी के नियमों का ज्ञान, शिक्षा स्तर, सरकार के कार्यक्रमों का ज्ञान आदि 3 बिंदु सातत्य में व्यवस्थित पैरामीटर शामिल थे। आत्मविश्वास बढ़ाना, आत्मसम्मान, निर्णय लेने का पैटर्न, क्षमता निर्माण, मनोवैज्ञानिक सशक्तीकरण, सामाजिक सशक्तीकरण, आर्थिक सशक्तीकरण और राजनैतिक सशक्तीकरण जैसे 8 आयामों के आधार पर 'सशक्तीकरण सूचक' (मीना, 2012) का आकलन किया गया। एस एच जी में शामिल होने से पहले और बाद में एस एच जी के सदस्यों के अनुभवों के अनुसार प्राप्त अंकों के बीच के अंतर के रूप में सशक्तिकरण की सीमा का मापन किया गया। सशक्तीकरण सूची के आकलन के लिए प्रत्येक आयामों से प्राप्त आँकडों को एक समान बनाया गया और उसे निर्णायकों द्वारा दिए गए अंकों के साथ गुणना की जबकि स्केल उत्पाद तरीके के माध्यम से स्केल की सामग्री वैधता की प्रासंगिक रेटिंग की। इन 8 आयामों के अंतर्गत आनेवाले उप आयामों के अंकों के द्वारा सशक्तीकरण सूची के प्रत्येक आयाम की गणना की गयी। मानकीकृत साक्षात्कार कार्यक्रमों से सशक्तीकरण सूची और स्वयं सहायक संघों के निष्पादन स्तर का आकलन किया गया।

व्यावहारिक विस्तार के भाग के रूप में, पहचाने गए सूक्ष्म उद्यमों में मानव संसाधन विकास के हस्तक्षेप कार्यक्रमों के साथ 100 उद्यमिता क्षमता निर्माण (ई सी बी) प्रशिक्षण कार्यक्रमों और मछुआरों के साथ 250 विचार विमर्श बैठकों का आयोजन किया गया। स्वयं सहायक संघों की गतिविधियों के प्रत्येक चरण का वीडियो कवरेज किया गया। एस एच जी के नेतृत्व में मात्स्यिकी पर आधारित 30 सूक्ष्म उद्यमों और 30 संबद्ध क्षेत्रों के सूक्ष्म उद्यमों की आर्थिक व्यवहार्यता का विश्लेषण किया गया और वीडियो लिया गया तथा सूक्ष्म उद्यमों की व्यापार योजनाओं को विकसित किया गया। आर्थिक व्यवहार्यता विश्लेषण के लिए, पहले एस एच जी उद्यम की औसत परिचालन लागत आकलित की

गयी और औसत कुल वार्षिक लाभ का आकलन किया गया। कुल निश्चित लागत की गणना करने के बाद, उद्यम के लाभ अर्जन की स्थिति/ब्रेक ईवन प्वाइंट (बी ई पी) की गणना निश्चित संपत्ति/(प्रति इकाई लाभ-प्रति इकाई परिवर्तनीय लागत) के रूप में की गई थी। ऋण वापसी की अवधि (पी बी पी) यानी प्रारंभिक निवेश/ कुल लाभ के रूप में इकाई समाप्त होने का समय वर्षों में अनुमानित किया गया था, जो कि उस उत्पाद द्वारा ब्रेक ईवन पोइट तक पहुंचने का वर्ष या समय विशेष उद्यम की लाभप्रदता सूचित किया गया (विपिनकुमार आदि, 2018, 2020)। मात्स्यिकी से संबंधित विभिन्न आय सृजन गतिविधियाँ करते समय महिला उद्यमियों द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य बाधाओं का विश्लेषण कार्यनीतिक सिफारिशों को बनाने के लिए किया गया।

परिणाम एवं चर्चा

सशक्तीकरण सूचकांक घटक और स्वयं सहायक ग्रुपों के निष्पादन का स्तर

स्वयं सहायक ग्रुपों के सशक्तीकरण सूचकांक और स्तर का मूल्यांकन 250 फिशरफोक इंटरेक्शन बैठकों के दौरान किया गया था और सी एम एफ आर आइ की व्यावहारिक परियोजना के विस्तार के हिस्से के रूप में मानव संसाधन विकास के हस्तक्षेप द्वारा विभिन्न सूक्ष्म उद्यमों पर एस एच जी के लिए आयोजित 100 उद्यमिता क्षमता निर्माण (ई सी बी) प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रशिक्षित प्रगणकों द्वारा सम्पन्न व्यवस्थित डेटा संग्रह के लिए एस एच जी के सदस्यों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से भी किया गया। प्रत्येक एस एच जी

सीपी संसाधन कार्य में लगी हुई महिलाएं

एस एच जी के लिए मछली मूल्य वर्धन में प्रशिक्षण

तालिका 1: सशक्तीकरण सूचकांक घटक और स्वयं सहायक ग्रुपों के निष्पादन का स्तर

सं.	आयाम	औसत स्कोर
1.	आत्मविश्वास बढ़ाना	0.779
2.	आत्मसम्मान	0.798
3.	निर्णय लेने का प्रतिमान	0.740
4.	क्षमता वर्धन	0.764
5.	मनोवैज्ञानिक सशक्तीकरण	0.790
6.	सामाजिक सशक्तीकरण	0.797
7.	आर्थिक सशक्तीकरण	0.835
8.	राजनैतिक सशक्तीकरण	0.779
	कुल सशक्तीकरण सूचक (औसत)	0.785
	निष्पादन का स्तर (औसत)	69.54 प्रतिशत

स्वयं सहायक ग्रुपों के सूक्ष्म उद्यमों का आर्थिक व्यवहार्यता विश्लेषण

स्वयं सहायक ग्रुपों द्वारा नियंत्रित विविध सूक्ष्म उद्यमों की आर्थिक व्यवहार्यता का विश्लेषण पिछले तीन वर्षों में परियोजना के लिए किये गए व्यय और प्राप्त लाभ के आधार पर एकत्रित आंकड़े के अनुसार किया गया। इसकी औसत परिचालन लागत और औसत लाभ की गणना की गयी और इन उद्यमों के विशेष घटक जैसे लाभ अर्जन की स्थिति (बी ई पी) और ऋण वापसी की अवधि (पी बी पी) का आकलन किया गया। यह परिणाम तालिका 2 में दिया गया है। आर्थिक व्यवहार्यता विश्लेषण के लिए एस एच जी उद्यम की औसत परिचालन लागत की गणना की गयी और औसत कुल लाभ का आकलन किया गया। कार्यप्रणाली के विनिर्दिष्ट किए जाने के अनुसार कुल निश्चित लागत के आकलन के बाद बी ई पी और पी बी पी का आकलन किया गया, जो उत्पाद के लिए वर्ष के आधार पर लाभ अर्जित करने की अवधि तक पहुंचने का समय और इसे प्रत्येक उद्यम की लाभप्रदता के रूप में माना जाता है ।

आर्थिक व्यवहार्यता विश्लेषण के आधार पर, स्वयं सहायक ग्रुपों की उद्यमिता क्षमता निर्माण (ई सी बी) पर लिंग परिप्रेक्ष्य के विशेष सन्दर्भ में सफलता कहानियां तैयार की गयीं और समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र में एस एच जी पर जेंडर मुख्य धारा श्रेणी के रूप में 25 वीडियो वृत्तचित्र तैयार किए गए (इनमें 4 महिलाओं के समुद्री खाद्य अंतर्राष्ट्रीय वीडियो प्रतियोगिता के लिए चुने गए)।

तालिका 2 में दिए गए दो भागों में सूक्ष्म उद्यमों के एक वर्ष तक का पी बी पी और एक से अधिक वर्षों तक का पी बी पी अलग से दिया गया है । सांकेतिक अर्थशास्त्र के आधार पर बी ई पी और पी बी पी के अनुसार उचित सूक्ष्म उद्यमों का चयन करने में इस तालिका का उपयोग किया जा सकता है। तकनीकी व्यवहार्यता, आर्थिक व्यवहार्यता और स्थान विशिष्टता के अनुसार पी बी पी और बी ई पी पर आधारित उद्यमों का चयन किया जा सकता है। एक स्थान पर पर्याप्त बी ई पी और पी बी पी के साथ उद्यम का स्पष्ट रूप से अलग भौगोलिक स्थान में एक ही परिणाम को दोहराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि एस एच जी उद्यम का निष्पादन समय-समय पर, स्थान एवं स्थिति के अनुसार भिन्न होता है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के कारकों से प्रभावित होता है।

संक्षेप में, देश के 5 समुद्रवर्ती राज्यों से मछुआरों के एस एच जी द्वारा प्रभावी ढंग से किए जाने वाले मात्स्यिकी पर आधारित विभिन्न सूक्ष्म उद्यमों (30 सं.) का व्यावहारिक निर्धारण किये जाने पर कुछ वैध अनुमान व्यक्त होते हैं। यह बात अन्तर्निहित थी कि ज़्यादातर काम पुरुष केन्द्रित होते थे फिर भी कुछ ध्यान देने योग्य गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका भी होती थी। इस अध्ययन के लिए तैयार किये गए 'निष्पादन निर्धारण' और 'सशक्तीकरण सूचकांक' का मापन बनाए रखने के आधार पर भविष्य में अन्य क्षेत्रों के लिए उपयोगी है। सशक्तीकरण सूचकांक में पहचानी की गयी कमियां अधिकारियों को सटीक दिशा में आगे बढ़ने के लिए सही प्रतिक्रया देती हैं। आजीविका वृद्धि के लिए मात्स्यिकी पर आधारित विविध उद्योगों के लाभ अर्जन की स्थिति और ऋण वापसी की अवधि के आधार पर उचित सूक्ष्म उद्यमों का चित्रण आर्थिक

तालिका 2: मात्स्यिकी पर आधारित सूक्ष्म उद्यमों के निष्पादन स्तर, सशक्तीकरण सूचक और आर्थिक व्यवहार्यता विश्लेषण (n=1000)

सं.	सूक्ष्म उद्यम (मात्स्यिकी)	एस एच जी की संख्या = 1000	निष्पादन का औसत स्तर	औसत सशक्तीकरण सूचक	लाभ अर्जन की स्थिति	ऋण वापसी की अवधि (वर्षों में)
ऋण वापसी की अवधि : 1 वर्ष तक						
1	मछली निषेचन ईकाई	20	72.8	0.82	1145 कि.ग्रा.	1
2	अचार बनाने की ईकाई	75	72.3	0.83	3680	0.8
3	मछली शुष्कन ईकाई	60	70	0.78	4240	0.9
4	शंबु पालन इकाई	60	76	0.84	95.29	1
5	शुक्ति पालन इकाई	60	75.9	0.82	1132 इकाई	1
6	चिंगट पालन इकाई	30	59.6	0.69	650 कि.ग्रा.	1
7	पिंजरा मछली पालन इकाई	50	72.2	0.82	187 कि.ग्रा.	1
8	पर्ल स्पॉट पालन इकाई	15	67.5	0.78	30 कि.ग्रा.	1
9	तिलापिया पालन इकाई	15	65.5	0.76	50 कि.ग्रा.	1
10	समुद्री शैवाल पैदावार इकाई	30	77.6	0.86	10080 कि.ग्रा.	1
11	मछली एमिनो यूनिट	22	75.4	0.84	361 इकाई	0.85
12	खपत के लिए तैयार मछली उत्पाद	25	74.4	0.83	7680 इकाई	1
13	केकड़ा प्रसंस्करण इकाई	25	68.3	0.77	3086 कि.ग्रा.	0.92
14	अक्वापोनिक्स इकाई	40	60.2	0.71	380 कि.ग्रा.	0.35
15	मछली खाद्य उत्पादन इकाई	20	59.3	0.61	1900 कि.ग्रा.	0.56
16	पर्ल स्पॉट बीज उत्पादन इकाई	10	67.5	0.79	150000 पोना मछली	1
ऋण वापसी की अवधि : 1 वर्ष से अधिक						
17	चीनी डूब जाल इकाई	12	79.2	0.89	1800 कि.ग्रा.	1.7
18	जलीय पर्यटन इकाई	15	78.9	0.88	29938 इकाई	3
19	सीपी प्रसंस्करण इकाई	75	57.3	0.68	8004 कि.ग्रा.	2
20	मछली शीत संग्रहण इकाई	18	70	0.8	3730 कि.ग्रा.	1.02
21	मछली विक्रय ईकाई	70	69.2	0.78	11,300 कि.ग्रा.	1.27
22	उत्खनन स्थानों में मछली पालन ईकाई	20	58.8	0.64	649 कि.ग्रा.	1.8
23	अलंकारी मछली पालन ईकाई	60	54.5	0.67	221633 पोना	1.28
24	द्विकपाटी संचयन इकाई	30	69.2	0.77	8000 कि.ग्रा.	2
25	पकाने के लिए तैयार मछली उत्पाद	25	71.4	0.81	4833 कि.ग्रा.	1.24
26	समुद्री खाद्य रसोई ईकाई	18	78.7	0.88	34618	3
27	मछली खरीद इकाई	40	79.5	0.87	12000 कि.ग्रा.	1.2
8	धान एवं मछली पालन	30	74.9	0.83	-	-
29	मछली एकत्रीकरण उपाय	10	80	0.89	-	-
30	हस्त चयन– मत्स्यन इकाई	20	50.1	30	-	-

मछली उर्वरक विपणन के लिए तैयार

महिलाओं द्वारा अमिनो एसिड उर्वरक की तैयारी

महिलाओं द्वारा मछली सुखाने का दृश्य

महिला स्वयं सहायक ग्रुप का सीफुड किचन

व्यवहार्यता अन्वेषण प्रदान करता है। जेंडर आयाम विश्लेषण से तैयार किए गए निष्कर्ष मुख्य धारा के पहलू पर महिलाओं और मछुआरों के अधिकार और विपणन चैनलों जैसे नीतियों और लिंग प्रक्षेपों के महत्वपूर्ण मुद्दों पर पर्याप्त संवेदनशीलता प्रदान करते हैं। यह माना जा सकता है कि, इस व्यापक क्षेत्र में बड़े नमूने सहित गहरे अनुसंधान की बहुत गुंजाइश है। ग्रुपों के बीच का आपसी संबंध उत्प्रेरक (catalytic socket) के रूप में और टिकाऊ आधार पर सशक्तीकरण का काम कर सकता है । सी एम एफ आर आइ के परियोजना अधिकारियों द्वारा मात्स्यिकी पर आधारित विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर वीडियो के रूप में सामने लायी गयी सफलता की कहानियां टिकाऊ आधार पर समान संबद्ध खंडों में स्वयं सहायता ग्रुपों को जोड़ने और जुटाने के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शन नियमावली के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

मुख्य शब्द:
जेंडर मुख्य धारा- gender mainstreaming
अर्जन की स्थिति- Break Even Point
ऋण वापसी की अवधि- Pay Back Period
उत्प्रेरक- catalytic socket